7

बुद्धि और ज्ञान का सोता मसीह

कुलुस्सियों 2:1–7

2:1–7 में पौलुस ने कुलुस्सियों को सुचित किया कि वह उन्हें परमेश्वर के ज्ञान से भरपूर होकर प्रेम से प्रोत्साहित और मज़बूत होते देखना चाहता था। हर आत्मिक जानकारी जिसकी उन्हें आवश्यकता थी मसीह में मिल सकती थी। इसलिए उनके लिए आवश्यक था कि वे उसकी मानें और उसके प्रति अपनी वफ़ादारी से पीछे न हटें।

पौलुस की इच्छा: परमेश्वर के भेद की उनकी पूरी समझ (2:1, 2)

[1]मैं चाहता हूं कि तुम जान लो, कि तुम्हारे और उन के जो लौदीकिया में हैं, और उन सब के लिए जिन्होंने मेरा शरीरिक मुंह नहीं देखा मैं कैसा परिश्रम करता हूं। [2]ताकि उनके मनों में शान्ति हो ओर वे प्रेम से आपस में गठे रहें, और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें, और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह को पहचान लें।

''मैं चाहता हूं कि तुम जान लो, कि मैं कैसा परिश्रम करता हूं'' (2:1)

1:28 में उसने कहा कि उसका लक्ष्य था कि ''हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित'' करे। ऐसा तभी हो सकता था यदि कुलुस्से और अन्य स्थानों के लोग अपने जीवनों में 2:2 में बताए गुणों को बढ़ाते। उन्हें मसीह में सिद्ध पेश करने के लक्ष्य के अपने योगदान के कारण उसे उनकी ओर से और लौदीकिया तथा अन्य किसी भी स्थान के मसीही लोगों की ओर से परिश्रम करना पड़ा। 1:28 से 2:1 को मिलाने पर उन के बीच सम्बन्ध स्पष्ट हो जाता है।

परिश्रम (*agōn*)[1] शब्द का अर्थ उत्साहपूर्ण और डटे रहकर परिश्रम करने में दिखाया गया समर्पण है। 1:29 में ''परिश्रम करता हूं'' शब्द इसी मूल शब्द से लिया गया है जिसे कई बार इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने वालों के द्वारा लगाए जाने वाले प्रयास से जोड़ा जाता है। यह इस बात को दिखाता है कि पौलुस कितनी लगन के साथ अपने साथी मसीही लोगों की आत्मिक भलाई चाहता था।

''मैं तुम्हारे और उनके लिए जो लौदीकिया में हैं'' (2:1)

पौलुस के पत्रों में कुछ भावनाएं व्यक्त की गई हैं।[2] जो लोग पौलुस को दूसरों के प्रति भावनाहीन, संवेदनारहित और उदासीन होने की कल्पना करते हैं वे पौलुस के करुणामय पहलू

को मोटे तौर पर गलत समझते हैं। इसी प्रकार से वे मसीही जो पौलुस से कभी मिले नहीं थे हो सकता है उन्हें दूसरों को उनके प्रति उसकी गहरी भावना और उनकी आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति उसकी गहरी भावना की समझ न हो। उसने अपनी दिलचस्पी की गम्भीरता को उन्हें दिखाने के लिए अपना यह पहलू दिखाया।

अपने काम के प्रति पौलुस का क्या व्यवहार था? उसका मिशन हर किसी तक जहां भी वह पहुंच सके पहुंचना था (रोमियों 1:14, 15), यहां तक कि उन लोगों तक भी जिन्हें वह मिल तो नहीं सकता था परन्तु अपने पत्रों के द्वारा समझा सकता था। उसने लिखा, ''यह तो मेरे लिए अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय'' (1 कुरिन्थियों 9:16)। पौलुस को **लौदीकिया** की कलीसिया की चिंता थी,[3] जो कुलुस्से के पश्चिम में लगभग 12 मील है। कई साल बाद इस कलीसिया को न ठण्डी न गर्म मण्डली बताया गया जो सांसारिक धन में तो धनवान थी पर आत्मिक रूप में निर्धन थी (प्रकाशितवाक्य 3:14-22)। उनकी स्थिति ऐसी थी कि प्रतीकात्मक अर्थ में कहें तो यीशु उन्हें अपने मुंह में से उगलने को था।

''और उन सब के लिए जिन्होंने मेरा शरीरिक मुंह नहीं देखा'' (2:1)

पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि कुलुस्से के मसीही लोगों में से किसी ने उसे देखा नहीं था। वह तीन समुहों से बात कर रहा था। उसने कहा कि उसने ''तुम्हारे लिए'' बड़ा परिश्रम किया अर्थात कुलुस्से के मसीही लोगों के लिए; जो लौदीकिया में हैं, उनके लिए; और उन सब के लिए जिन्होंने ''[उसका] शारीरिक मुंह नहीं देखा'' था। तीसरे समूह में अन्य सभी लोगों के साथ जो पौलुस से मिले नहीं थे पहले दो समूहों के कुछ लोग शामिल हो सकते हैं। यदि ऐसा है तो फिलिप्पुस नामक तराई में कुछ लोगों ने उसे देखा था, जबकि अधिकतर ने नहीं देखा था।

शारीरिक का अनुवाद यूनानी वाक्यांश *mou en sarki* (मूलतया ''मेरे शरीर में'') किया गया है जिसका अर्थ है जिन्होंने उसे ''शरीर में'' उसका **मुंह** नहीं **देखा** था। वह उन के बीच में जिन्होंने केवल उसे सुना था और जो वास्तव में उसे मिले थे, अन्तर कर रहा था।

ताकि उनके मनों को शान्ति मिले (2:2)

पौलुस का प्रबल प्रयास दूसरों को आत्मिक रूप में ऊंचा उठाने के लिए था। उसकी चिंता उनकी शारीरिक भलाई के बजाय उनके मनों की स्थिति थी। मनों (*kardiai*) का इस्तेमाल बाइबल में व्यक्ति के भीतरी जीवन के केन्द्र के लिए किया गया है। बाइबल में केवल एक जगह इस शब्द का अर्थ हृदय है जो लहू का प्रवाह करने वाला हृदय है (2 शमूएल 18:14; LXX)। व्यक्ति के भीतरी भाग की बात करने के अलावा इसका अर्थ शारीरिक केन्द्र भी हो सकता है जैसे ''भीतर'' (मत्ती 12:40)।

नये नियम में मानवीय ''मन'' की बात करते हुए *kardia* का इस्तेमाल बौद्धिक, मानसिक, और आत्मिक केन्द्र जिसमें कोई विचार करता है (मत्ती 9:4), समझता है (मत्ती 13:15), तर्क देता है (मरकुस 2:6), संदेह करता है (मरकुस 11:23), कल्पना करता है (लूका 1:51), ध्यान करता है (लूका 2:19), आश्चर्य करता है (लूका 3:15), कामना करता है (रोमियों

1:24), विश्वास करता है (रोमियों 10:10), धोखा खाता है (रोमियों 16:18), और दोष लगाता है (1 यूहन्ना 3:21) के आत्मिक केन्द्र के लिए इस्तेमाल किया गया है। इसमें किसी के उस भाग की बात करते हुए जो प्रेम करता है (मत्ती 22:37), शोक करता है (मरकुस 3:5), व्याकुल होता है (यूहन्ना 14:1), दुखी होता है (यूहन्ना 16:6), आनन्द करता है (प्रेरितों 2:26), उदास होता है (2 कुरिन्थियों 2:4), और शान्ति पाता है (कुलुस्सियों 4:8)। इसमें इच्छा, उद्देश्य (प्रेरितों 11:23) और इरादा (इब्रानियों 4:12) सब शामिल हैं।

पौलुस ने इन मसीही आत्मिक जीवनों के केन्द्र, उनके मनों को मज़बूत करने की इच्छा की। शारीरिक गुण आवश्यक हैं परन्तु उतने महत्वपूर्ण नहीं जितना भीतरी व्यक्ति अर्थात ''गुप्त मनुष्यत्व'' (1 पतरस 3:4)। परमेश्वर बाहरी रूप के बजाय मन को देखता है।[4] सुलेमान की शिक्षा महत्वपूर्ण है: ''सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है'' (नीतिवचन 4:23)। मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहता अर्थात शारीरिक जीवन ही अनिवार्य नहीं है, बल्कि परमेश्वर के वचन से अर्थात मन के आत्मिक भोजन से जीवित रहता है (मत्ती 4:4)।

''प्रेम से आपस में गठे रहें'' (2:2)

अनुवादित शब्द के मूल **आपस में गठे रहें** (*sumbibazō*) में किसी बात को साबित करने के लिए विचार (प्रेरितों 9:22), निष्कर्ष निकालने (प्रेरितों 16:10), सबक सिखाने (1 कुरिन्थियों 2:16), या लोगों को एक करने (इफिसियों 4:16; कुलुस्सियों 2:2, 19) के रूप में ''इकट्ठे करना'' की अवधारणा शामिल है। कुलुस्सियों में यह पांच में से चौथी बार है जहां पौलुस ने *agapē* का उल्लेख किया (देखें 1:4, 8, 13 [''प्रिय'']; 3:14)।

दाऊद के लिए योनातान का प्रेम के लोगों को आपस में गठे रहने का उदाहरण है (1 शमूएल 18:1)। मसीही लोगों के लिए एक दूसरे के लिए वैसी ही निकटता और लगाव होना आवश्यक है जैसा योनातान और दाऊद में था। एकता पक्के प्रेम और पक्के भरोसे पर निर्भर है।

यीशु ने समझाया कि एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होना था (यूहन्ना 10:16)। उसने सब विश्वासियों की एकता के लिए प्रार्थना की (यूहन्ना 17:20, 21)। पौलुस ने मसीही लोगों को विभाजित न होने के लिए समझाया (1 कुरिन्थियों 1:10), बल्कि दीनता और विनम्र सहित धीरज धर कर एक-दूसरे की सह लें (इफिसियों 4:1-3)। परमेश्वर ने इस तथ्य के आधार पर एकता को सम्भव बनाया है कि ''एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है; एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है'' (इफिसियों 4:4-6)। एकता मसीह के पीछे चलकर आती है न कि मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा को मानने से (कुलुस्सियों 2:8)। मसीह लोगों को उसके पूरे ढील ढौल में बढ़ने पर आपस में गठता है (इफिसियों 4:13)।

सब वफ़ादार विश्वासियों की एकता हर मसीही का लक्ष्य होना चाहिए। हमें संसार के लोगों के साथ या उनके साथ जो उन रीतियों, व्यवहारों और दुराचार में लगे हैं जो मसीह की ओर से नहीं हैं, एकता की तलाश नहीं करनी चाहिए (रोमियों 16:17; 2 कुरिन्थियों 6:14-17)।

''और वे पूरी समझ का सारा धन प्राप्त करें'' (2:2)

पौलुस के अनुसार सच्चा **धन** पैसे या सांसारिक मूल्य की वस्तुओं में नहीं मिलता है। 1:27 में भी जिस ''धन'' (*ploutos*) का उल्लेख है वह **समझ** (*sunesis*) में मिलता है। पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर कुलुस्सियों को समझ दे कि परमेश्वर का उनका ज्ञान बड़े (1:9, 10)। सांसारिक धन के बजाय मसीही लोगों को स्वर्गीय धन, आत्मिक खज़ानों और सनातन आशिषों की तलाश करनी चाहिए (मत्ती 6:20; 1 तीमुथियुस 6:19)।

अज्ञानता से असुरक्षा मिल सकती है जबकि समझ से आत्मविश्वास मिल सकता है। परमेश्वर का प्रकट वचन उसकी योजनाओं और उद्देश्यों की गहरी समझ देता है। उसके वचन की जानकारी यह आश्वासन देती है कि मसीही जीवन में ''इस समय के और आने वाले जीवन की ही प्रतिज्ञा'' है (1 तीमुथियुस 4:8)। मसीही लोग मसीह में विश्वास की कीमत पर आश्वस्त हो सकते हैं। यीशु की शिक्षा में मिलने वाले खज़ाने हमें प्रेम के द्वारा आपस में गठ सकते हैं और हमें परमेश्वर के धन को समझने में सहायता कर सकते हैं।

इसके अलावा ''अज्ञानता'' के अंधेरे में रहने वाले लोग उद्धार न पाए होने की स्थिति में रहते हैं (रोमियों 10:1-3)। वे परमेश्वर के जीवन से निकाले हुए हैं (इफिसियों 4:17, 18)। परमेश्वर के साथ व्यक्ति के सम्बन्ध में समझ एक आवश्यक तत्व है।

''और परमेश्वर पिता के भेद को अर्थात मसीह को पहचान लें'' (2:2)

मसीही लोगों को समझ के एक स्तर की आवश्यकता है। यीशु और उसके द्वारा पेशकश किए जाने वाले उद्धार के भेद की **पहचान** परमेश्वर के प्रकाशन की समझ से ही होती है। **परमेश्वर पिता के भेद अर्थात मसीह** वाक्यांश एक यूनानी धर्मशास्त्र में कई संस्करण के रूपांतरण हैं और उनकी व्याख्या अलग अलग ढंगों से हो सकती है। यूनानी धर्मशास्त्र की बात को चार अलग-अलग ढंगों से समझा जा सकता है:

> (1) ''परमेश्वर का भेद अर्थात मसीह'' जिसमें ''मसीह'' ''परमेश्वर'' के विरोध में है, (2) ''परमेश्वर के मसीह का भेद,'' परन्तु ''मसीह'' से पहले निश्चित उपपद का न होना इसे बिल्कुल असम्भव बना देता है। (3) ''परमेश्वर मसीह का भेद'' या, ''ईश्वरीय मसीह,'' जिसके लिए [नये नियम] में कोई समानांतर नहीं है, और (4) ''परमेश्वर का भेद, जो कि मसीह है,'' जिसमें ''मसीह'' पूरे ''परमेश्वर का भेद'' वाक्यांश के विरोध में है। यह अन्तिम वाला अर्थ अधिकतर आधुनिक टीकाकारों और अनुवादकों द्वारा स्वीकार किया जाता है।[5]

एच. सी. माउल और कई अन्य लोग इस निष्कर्ष से सहमत हैं। विभिन्न सम्भावनाओं पर चर्चा करने के बाद, माउल ने कहा, ''तो हम इसका अनुवाद करते हैं, 'परमेश्वर का भेद, जो कि मसीह है।''[6] यीशु, जैसा कि उसकी जीवन और शिक्षा में दिखाई देता है, उस भेद का प्रकाशण है जो कि पिछली पीढ़ियों से गुप्त रहा था। पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां उसके आने और उसके काम की प्रकृति का संकेत देते हैं, परन्तु भेद का पर्दा तब तक बना रहा जब तक वह संसार में नहीं आया। उसके आने के कारण अब यीशु में परमेश्वर की पहचान होती है: ''इसलिए कि

परमेश्वर ही है जिसने ... हमारे हृदयों में कहा कि परमेश्वर की महिमा की पहचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो'' (2 कुरिन्थियों 4:6)।

इस पत्र में ''भेद'' (*mustērion*) शब्द चार बार आया है (1:26, 27; 2:2; 4:3)। इसका अर्थ हिन्दी शब्द से अलग जिसका आम तौर पर अर्थ रहस्यमयी और चकरा देने वाला, बल्कि व्याख्या या समझ से परे होता है। पौलुस ने इसे ईश्वरीय भेद के लिए इस्तेमाल किया जिसे केवल ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा समझा जा सकता है न कि मानवीय तर्क और प्रयास के द्वारा।

यूनानी और रोमी संस्कृतियों में ''भेद'' शब्द विभिन्न रहस्यवादी धर्मों के लिए इस्तेमाल होता था। अपने देवी देवताओं से सम्बन्धित कहानियों पर आधारित उनके संस्कार धर्मावेशी नाटकों जैसे होते हैं। इन सम्प्रदायों में जटिल प्रतीत होते थे जो उनका सदस्य बनने की चाह रखने वालों को बड़ी सावधानी से सिखाए जाते थे। कुछ मामलों में सदस्यता पाने की पहल करने के लिए प्रवेश पाने वालों के लिए देवताओं के साथ सम्प्रदाय के सदस्यों द्वारा उनके दुख सहने, मृत्यु और पुनरुत्थान को दिखाए जाने को देखकर, दुख उठाना आवश्यक होता था। बाहरी व्यक्ति के लिए यह बेकार होता था परन्तु प्रवेश करने वाले के लिए यह अनुभव प्रभावशाली और स्वभाव को बदलने जैसा होता था।

यीशु ने परमेश्वर के भविष्यवाणी किए हुए राज्य की अप्रकट प्रकृति के सम्बन्ध में *mustērion* का इस्तेमाल किया (मत्ती 13:11)। मसीह के द्वारा परमेश्वर का योजनाबद्ध ढंग बीते युगों में गुप्त रखा गया था परन्तु प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर आत्मा के द्वारा प्रकट कर दिया गया (रोमियों 16:25; इफिसियों 3:4, 5)। अन्य लोगों के साथ पौलुस को यह प्रकाशन मिला था (1 कुरिन्थियों 4:1; इफिसियों 1:9; 3:3)।

उसका प्रकाशनः मसीह में सारी बुद्धि और ज्ञान (2:3, 4)

[3]जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं। [4]यह मैं इस लिए कहता हूं, कि कोई मनुष्य तुम्हें लुभाने वाली बातों से धोखा न दे।

''जिस में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार छिपे हुए हैं'' (2:3)

छिपे (*apokruphoi*) अंग्रेज़ी शब्दों ''apocrypha'' (अपोक्रिफा) और *apocryphan* (अपोक्रिफन) का आधार है। पौलुस आत्मिक **भण्डार** और **छिपे** की बात लिख रहा था। प्राचीन संसार में, जब बैंक नहीं होते थे, तो कीमती भण्डारों को आम तौर पर जब तक उनकी आवश्यकता नहीं होती थी, सुरक्षित स्थानों पर छिपा दिया जाता था। परमेश्वर के आत्मिक धन को पाने के लिए खोजने वाले के लिए वहां अर्थात यीशु मसीह में ढूंढ़ना आवश्यक है जहां परमेश्वर के भण्डार छिपे हुए हैं।

पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि कुलुस्से के लोग परमेश्वर के गोदाम में यीशु की सारी शिक्षाओं को समझ पाएंगे। उनके लिए इसकी इच्छा यह थी कि वे समझ लें कि *सारे* ''बुद्धि'' और **ज्ञान** (*gnōsis*) मसीह में छिपे हुए हैं और वे कहीं और नहीं मिल सकते। इसी पर कुलुस्सियों को उन्हें कहीं और देखने की आवश्यकता नहीं है, यानी उन्हें उन शिक्षाओं

की ओर नहीं छुकना चाहिए था जो मसीह से पहले की हों, या नये नियम के प्रेरितों या भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा के बाद बनी हों। यीशु वह सब कुछ है जिसकी मसीही व्यक्ति को आवश्यकता है।

''यह मैं इस लिए कहता हूं, कि कोई मनुष्य तुम्हें
लुभानेवाली बातों से धोखा न दे'' (2:4)

पौलुस कुलुस्से के भाइयों को आश्वस्त कर रहा था कि उन्हें बुद्धि और ज्ञान कहीं और ढूंढ़ने की आवश्यकता नहीं है। वह उन्हें उन विचारों को मानने के लिए जो आकर्षित तो थे परन्तु व्यर्थ थे मसीह की साबित सच्चाई से पीछे न हटने की चेतावनी भी दे रहा था। मसीही लोगों पर हमेशा झूठे शिक्षकों, प्रभावशाली वक्ताओं और भावनात्मक रूप में आकर्षित करने वाले कार्यक्रमों से मोहित होने का खतरा रहता है। **कोई मनुष्य** कहते समय पौलुस के मन में कोई विशेष व्यक्ति नहीं था। उसकी व्यापक बात किसी भी व्यक्ति पर लागू होती है जिसकी शिक्षा यीशु द्वारा दिए गए संदेश के विपरीत है। पौलुस ने कहा कि *कोई मनुष्य* जो किसी दूसरे सुसमाचार को सुनाए वह श्रापित हो, चाहे वह ''हम'' हों यानी स्वयं प्रेरित हों या स्वर्ग से कोई दूत (गलातियों 1:7, 8)।

गलत शिक्षा देने वाले यदि अच्छे लगने वाले भाषणों पर अपनी शिक्षा को बनाए रख सकते हैं। मसीही लोग अपने विश्वास के ठोस आधार पर ही निर्भर हो सकते हैं, क्योंकि यीशु ने वह ठोस सच्चाई प्रकट कर दी है जिस पर हमें मकान बनाना है (मत्ती 7:24-27)। ऐसे व्यवहार और तर्क जो लोगों का ध्यान उनकी ओर लगाते हैं जिसे वे सुनना चाहते हैं (2 तीमुथियुस 4:3, 4) भ्रमित करने वाले हैं। मसीही लोगों को प्रभावशाली शिक्षकों और दिलचस्प प्रस्तुतियों से आगे बढ़कर उस सार को देखना आवश्यक है जो बताया जा रहा है। पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखा कि उसने मसीह और उसके क्रूस चढ़ाए जाने का ही प्रचार किया था और अपने सुनने वालों को मानवीय बुद्धि से समझाने की कोशिश नहीं की (1 कुरिन्थियों 2:1, 2; देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:5)।

आत्मा के द्वारा उसे दिए गए प्रकाशन का प्रचार करके और उसका बचाव करके पौलुस अपनी सेवकाई को पूरा कर रहा था। यीशु ने उसे प्रेरित बनाकर और उस पर सुसमाचार को प्रकट करके इस काम के योग्य बना दिया था (गलातियों 1:11, 12)। पौलुस ने कलीसिया के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझा (कुलुस्सियों 1:25), जिसे अब वह कुलुस्सियों तथा दूसरे लोगों के लाभ के लिए पूरा कर रहा था जिन्होंने इस पत्र को पढ़ना था।

2:3-10 के कथन और उन निष्कर्षों के लिए केस बना रहे थे, जिन्हें पौलुस ने अपने पत्र के शेष भाग में देना था। मसीही लोगों की आवश्यकता अपनी शिक्षा के साथ यीशु ही है। हम उन अलग-अलग शिक्षाओं से भरमाए न जाएं जो आकर्षित हो सकती है परन्तु एकमात्र सच्चे गुण यीशु पर आधारित नहीं है।

उसका आनन्दः मसीह में उनका विश्वास (2:5)

[5]क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूं, तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूं,

और तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं।

''क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूं,
तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूं'' (2:5)

क्योंकि मैं यदि शरीर के भाव से तुम से दूर हूं, पौलुस ने आगे कहा, **तौभी आत्मिक भाव से तुम्हारे निकट हूं।** क्या वह इस अर्थ में कुलुस्सियों के साथ था जैसे पिता उस पुत्र के साथ होता है जो घर को छोड़ रहा होता है ? पिता कह सकता है, ''बेटा, मैं चाहे तेरे साथ-साथ नहीं हूंगा, पर मेरा मन तेरे साथ होगा।'' पौलुस ने ऐसी ही बात एक और जगह की: ''हे भाइयो, जब हम थोड़ी देर के लिए मन में नहीं वरन प्रकट में तुम से अलग हो गए थे, तो हम ने बड़ी लालसा के साथ तुम्हारा मुंह देखने के लिए और भी अधिक यत्न किया'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:17)। इन शब्दों से ऐसा नहीं लगता है कि भाइयों के सम्बन्ध में उसे ईश्वरीय समझ थी, परन्तु इन से संकेत मिलता है कि वह उनके प्रति अपने प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण उनके साथ था।

क्या वह इपफ्रास की रिपोर्ट के कारण आत्मिक भाव से उनके साथ था (1:7, 8) ? पौलुस को कुरिन्थियों के बारे में जानकारी खलोए के घराने की एक रिपोर्ट से (1 कुरिन्थियों 1:11) उनकी ओर से आए पत्र से (1 कुरिन्थियों 7:1) और शायद किसी अन्य स्रोत से मिली थी (1 कुरिन्थियों 4:18; 5:1; 11:18; 15:12; 2 कुरिन्थियों 7:7; 10:10)। उसे अन्य मण्डलियों की खबरे भी विभिन्न स्रोतों से मिली थीं (रोमियों 1:8; 1 थिस्सलुनीकियों 1:8; 3:6)। क्या ऐसी खबरों से उसे लगता था कि वह उन सदस्यों के निकट है जिससे वह कह सके कि वह आत्मिक भाव में उनके साथ है ?

क्या परमेश्वर ने पौलुस को कुलुस्से के लोगों के जीवनों में सीधे देखने दिया ? यदि पौलुस के कहने का अर्थ पहले वाली सम्भावनाएं था तो उसने यह क्यों कहा कि वह ''तुम्हारे व्यवस्थित जीवन को और तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को जो मसीह में है देखकर प्रसन्न होता'' था (आयत 5) ? यदि उसके कहने का अर्थ बाद वाला था तो परमेश्वर की सहायता से उसने अपनी आत्मा में समझाया इसने उसे उनकी आत्मिक गतिविधियों से परिचित करवाया।

अन्य वचनों से संकेत मिल सकता है कि पौलुस को यह जानकारी ईश्वरीय रूप में दी गई (गलातियों 1:6; 6:12; फिलिप्पियों 4:2)। 1 कुरिन्थियों 5:3 में उसने कहा, ''मैं तो शरीर के भाव से दूर था, परन्तु आत्मा के भाव से तुम्हारे साथ होकर, मानो उपस्थिति की दशा में ऐसे काम करनेवाले के विषय में यह आज्ञा दे चुका हूं।'' यह आयत अपने आप में व्याख्या देती है कि उसे कुरिन्थियों की गतिविधियों के बारे में पता था। वह पुत्र और माता के अनुचित व्यवहार के सम्बन्ध पर निर्णय ले पाया क्योंकि अपनी आत्मा में उसे उनके सम्बन्ध की जानकारी थी।

''तुम्हारे विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास
की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं'' (2:5)

पौलुस को यह जानकारी चाहे जैसे भी मिली पर उसने अपने पाठकों को बताया कि वह **तुम्हारे** [उनके] **विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता**

देखकर प्रसन्न होता था।

पौलुस को यह जानकारी चाहे जैसे भी मिली, उसने अपने पाठकों को बताया कि वह **तुम्हारे** [उनके] **विधि-अनुसार चरित्र और तुम्हारे विश्वास की जो मसीह में है दृढ़ता देखकर प्रसन्न होता हूं।** अपनी आत्मा में उनके द्वारा अच्छे जीवन जीए जाने को देखकर उसे आनन्द मिला। प्रेरित यूहन्ना को वफ़ादार मसीही लोगों के जीवनों को देखकर आनन्द करने का कारण मिला। उसने कहा, ''इस से बढ़कर और कोई आनन्द नहीं, कि मैं सुनूं, कि मेरे लड़के-बाले सत्य पर चलते हैं'' (3 यूहन्ना 4; देखें 2 यूहन्ना 4)। परमेश्वर का शिक्षक आनन्द से भर जाता है जब वह मसीही लोगों को भक्तिपूर्ण और धर्मी जीवन जीते हुए पाता है। मसीह के अच्छे सेवक आनन्द करते हैं जब वे अपने परिश्रम का सही फल मिला देखते हैं।

पौलुस ने कुलुस्सियों के ''विधि अनुसार चरित्र'' (*taxis*) और मसीह में उनके विश्वास की दृढ़ता (*stereōma*) को देखें। रॉबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. निडा ने इन दो शब्दों के सम्बन्ध में लिखा है, ''*taxis* एक सैनिक शब्द है जिसका अर्थ 'क्रमानुसार बंधे' 'स्तम्भ' है; *stereoma* का अर्थ 'दृढ़ता' 'प्रामाणिकता' है और इसका इस्तेमाल भी सैनिक संदर्भ में ही होता है।''[7] सैनिक पृष्टिभूमि के बाहर इन शब्दों का अर्थ याजकाई क्रम में (लूका 1:8; इब्रानियों 5:6) या उन जीवनों के अर्थ में हो सकता है जो शारीरिक रूप में मज़बूत हैं, जैसे प्रेरितों 3:7 में।

कुरिन्थियों के नाम अपने निर्देश में पौलुस ने यह कहते कि मसीही सभा में एक ही समय में दो गतिविधियां नहीं होनी चाहिए *taxis* का इस्तेमाल किया, यह खतरनाक होना था इसके बजाय आराधना के भाग क्रमबद्ध ढंग से और ''क्रमानुसार'' होने चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:40, आयतें 27, 31 के सम्बन्ध में)। प्रचारक के बोलते समय गीत गाना खतरनाक होना था। प्रभु-भोज लेने के समय इसमें भाग लेने वालों को गीतों के साथ गीत गाकर उनका ध्यान हटाना क्रम से प्रभु-भोज में भाग लेने वालों के द्वारा इसमें भाग लेते समय ध्यान लगाने को गीत गाकर उनका ध्यान हटाना क्रम से बाहर होना था। आराधना में किसी दूसरे के साथ उलझने वाली कोई गतिविधि *Taxis* अर्थात ''क्रमानुसार'' नहीं होनी थी।

पौलुस ने चाहा कि मसीही लोगों के जीवन व्यवस्थित, संयम और मज़बूत हों। वह उन्हें वैसे ही मज़बूत देखना चाहता था जैसे वह अपने जीवनों को मज़बूत देखना चाहता था। उसने लिखा, ''मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं'' (1 कुरिन्थियों 9:27)।

विश्वास का आधार होना आवश्यक है। यह शिक्षाओं में, दूसरों पर या भौतिक वस्तुओं पर हो सकता है। मसीही विश्वास शारीरिक आशिषों के लिए ही नहीं (मत्ती 6:33), बल्कि आत्मिक आशिषों के लिए भी अर्थात यीशु में है (इफिसियों 1:3)। मसीही विश्वास का आरम्भ उस में होता है, उसमें विश्वास के साथ बना रहता है और उसमें विश्वास के द्वारा लक्ष्य तक पहुंचता है (रोमियों 1:17)। वह मसीही लोगों के लिए जीवन और आशा का केन्द्र है (यूहन्ना 14:6); और किसी में उद्धार नहीं है (प्रेरितों 4:11, 12)।

कुलुस्सियों के जीवनों के बारे में पौलुस को जो कुछ पता चला था उससे उसने पाया कि वे अच्छा कर रहे हैं और उनका विश्वास सच्चा है। इस तथ्य ने उसे उन्हें सांसारिक आनन्दों, रोमांचकारी संस्कारों, मानवीय दर्शन शास्त्र या लुभाने वाले भाषणों से भ्रमित न होने की चेतावनी

देने से रोका नहीं। उसने इस बात को समझा कि कुछ लोग सच्चाई के बजाय व्यक्तित्व से अधिक प्रभावित होते हैं। सच्चे विश्वास से चलना आवश्यक है, क्योंकि इसे चुनौती मिलती रहती है।

कुलुस्सियों की आत्मिक बेहतरी या उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए पौलुस को शारीरिक रूप में उनके साथ होना आवश्यक नहीं था। अपनी आत्मा में वह उनकी आत्मिक आवश्यकताओं पर ध्यान करके उन्हें पूरा करने की इच्छा कर सकता था चाहे वह उनके साथ नहीं था।

उसकी ताड़ना: जैसे उन्होंने मसीह को ग्रहण किया था वैसे ही उसमें चले गए (2:6)

6सो जैसा तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है, वैसे ही उसी में चलते रहो।

''सो जैसा तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है'' (2:6)

सो (*oun*) इस विचार को इस बात से जोड़ता है कि ''बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार'' मसीह में हैं (आयत 3)। यह जानते हुए कि मसीह में उनके लिए ये भण्डार उपलब्ध थे, कुलुस्से के लोगों को केवल उसी के साथ चिपके रहना और अपने जीवनों को उसकी आज्ञाओं के मापदण्डों से सीमित करना आवश्यक था। उन्होंने उसे सारी सच्चाई के देने वाले और प्रभु और मसीहा ने ग्रहण किया था, परन्तु मसीह यीशु को ग्रहण करना परमेश्वर के प्रति हमारे आज्ञापालन का अन्त नहीं है बल्कि यह मसीही चाल चलने का आरम्भ भी है। मसीही जीवन का बढ़ना इसके आरम्भ के साथ बरकरार रहना आवश्यक है।

कुलुस्सियों ने यीशु को प्रभु मसीह मान लिया; यानी उन्होंने उसे हर बुद्धिमान आत्मिक विचार और जानने योग्य सच्चाई देने वाले के रूप में मान लिया था। मसीह के रूप में वह परमेश्वर का अभिषिक्त हाकिम है जो अब स्वर्ग और पृथ्वी पर राज करता है (मत्ती 28:18)। यीशु के रूप में (''परमेश्वर उद्धार करता है''; देखें मत्ती 1:21) वह पापों को क्षमा करने का परमेश्वर का माध्यम है। प्रभु के रूप में (रोमियों 10:9), वह एक ही प्रभु है (इफिसियों 4:5) जिसकी आज्ञा माननी आवश्यक है (लूका 6:46)। जो लोग उसकी इच्छा का विद्रोह करते हैं वे पाप के सेवक हैं और नष्ट हो जाएंगे (प्रेरितों 3:23)। दिल से सुसमाचार की आज्ञा को मानकर कुलुस्से के लोग धार्मिकता के सेवक बन गए थे (रोमियों 6:17, 18)। नये जीवन में उनका बदल जाना बपतिस्मे के समय हुआ था जब उन्होंने यीशु के साथ उसके दफ़नाए जाने और जी उठने को साझा करके उसे ग्रहण किया था (रोमियों 6:4)। यीशु के साथ जिलाए जाने के बाद (कुलुस्सियों 2:12) उसके साथ उनकी संगति बनी रहनी थी और पाप में उनका योगदान भंग हो जाना था (रोमियों 6:5, 6)।

यूनानी क्रिया शब्द *paralambanō* (''ग्रहण कर लिया'') का अर्थ आम तौर पर किसी चीज़ को किसी दूसरे के हाथ से लेना होता है।[8] कुलुस्सियों ने इपफ्रास के द्वारा लाए गए संदेश के द्वारा यीशु को ''ग्रहण कर लिया'' था। परिणाम उनका यीशु में बने रहना होना चाहिए था। वह उनके जीवनों का आरम्भिक बिन्दु और केन्द्र था। उसकी आज्ञाओं को मानकर उन्हें उस में बने

रहना था (1 यूहन्ना 2:3)। उनका चलना केवल उसके *साथ* नहीं बल्कि उस *में* भी था। उसने उनके चलने के लिए पापदण्ड ठहरा दिया। मसीही चलन उसके अन्दर है न कि उसके बाहर।

शायद आत्मा पौलुस के द्वारा एक संदेश दे रहा था जो गलत धारणाओं का उत्तर देने में उपयोगी होना था जिसे ज्ञानवादियों ने बाद में सिखाना था। ए. टी. रॉबर्टसन ने कहा है:

> वह सबका प्रभु है, हर प्रधानता और सामर्थ के ऊपर है (इफिसियों 1:21)। पहली सदी के अन्त के निकट कुरिन्थियन ज्ञानवादियों ने *मनुष्य* यीशु और *aeon* मसीह में सीधा अन्तर किया जो उसके बपतिस्मे के समय उस पर आया और क्रूस पर उसे छोड़ गया। इसमें कुलुस्से में इस शिक्षा की भविष्यद्वाणी हो सकती है। यह केवल यीशु और मसीह की पहचान नहीं है जिस पर पौलुस यहां ज़ोर देता है। बल्कि उसके प्रभु होने और उसके अगुआ होने की पहचान भी है, कि मन में मसीहा होने की बात है या नहीं। पौलुस के लिए यह कोई काल्पनिक मसीह या ऐतिहासिक यीशु नहीं है। लोगों ने इतिहास वाले यीशु को पहचान लिया था और उसकी ईश्वरीयता को मान लिया था।[9]

आयतें 6 और 7 में पांच रूपकों का इस्तेमाल किया गया है। (1) यीशु में ''चलने'' का निर्देश सुझाव देता है कि यीशु पगदण्डी है। (2) ''जड़ पकड़ते'' पौधे के खुराक और शक्ति लेने के लिए अपनी जड़ों को नीचे करने का अर्थ देता है। (3) ''बढ़ते'' अच्छी तरह से निर्मित इमारत की मज़बूती का संकेत देता है। (4) ''दृढ़ होते'' का अर्थ है कि वे अपने विश्वास में परिपूर्ण हो गए थे। (5) ''सिखाए गए'' दिखाता है कि उन्हें पहली चार गतिविधियों को पूरा करने के लिए आवश्यक जानकारी थी।

संक्षेप में, पौलुस की ताड़ना है ...

> जैसा तुमने मसीह को ग्रहण कर लिया है, ''वैसे ही उसी में चलते रहो'' (आयत 6)। ''जड़ पकड़कर उसमें बढ़ते जाओ'' (आयत 7)। जैसा तुम्हें सिखाया गया था, ''वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ'' (आयत 7)।

''वैसे ही उसी में चलते रहो'' (2:6)

चलते रहो (*peripateō*) का इस्तेमाल यीशु के झील के किनारे चलते समय शारीरिक हलचल के सम्बन्ध में किया गया था (मत्ती 4:18)। आत्मिक अर्थ में ''चलते'' का अर्थ एक विशेष क्षेत्र में बढ़ना है। चलना अंधेरे में (यूहन्ना 8:12), दिन में या रात में (यूहन्ना 11:9, 10), ज्योति में (यूहन्ना 12:35), जीवन के नये पन में (रोमियों 6:4), शरीर के अनुसार (रोमियों 8:4), विश्वास से (2 कुरिन्थियों 5:7), आत्मा से (गलातियों 5:16), पाप में (इफिसियों 2:1, 2), भले कामों में (इफिसियों 2:10), प्रेम में (इफिसियों 5:2), अव्यवस्थित ढंग से (2 थिस्सलुनीकियों 3:11; KJV) और सच्चाई में (2 यूहन्ना 4) हो सकता है। इस पत्र में पौलुस ने चार बार ''चलना'' के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल (1:10; 2:6; 3:7; 4:5; KJV) मसीही जीवन में हलचल के अर्थ में किया। मसीही लोगों को विश्वास में दृढ़ होने (1 कुरिन्थियों 16:13) और मसीह में दृढ़ता से चलने को कहा जाता है न कि कभी बैठने को।

कुलुस्सियों को उसी भरोसे और आत्मविश्वास के साथ यीशु में चलना था जो उन्हें उसे

ग्रहण करने पर मिला था। उन्होंने उस में केवल तभी चल पाना था जब वे उसमें प्रवेश करते। उन्होंने यीशु में तब प्रवेश किया जब उसमें विश्वास के द्वारा वे बपतिस्मे में उसके साथ दफ़नाए गए (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27)। उस में आ जाने पर उन्हें वैसे ही चलना था जैसे वह चलता था (1 यूहन्ना 1:6)।

उसका प्रोत्साहनः मसीह में बढ़ना (2:7)

[7]और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसा तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो।

''जड़ पकड़ते'' (2:7)

यह समझाने के लिए कि मसीही लोगों को क्या आवश्यकता है उसने **जड़ पकड़ते,** ''बढ़ते जाओ'' और ''दृढ़ होते जाओ'' के तीन कृदंतों का इस्तेमाल किया।

''जड़ पकड़ते'' (*hrizoō* से *errizōmenoi*) का अर्थ है ''जड़ पकड़वाना।'' इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर पक्की तरह से सट जाने के प्रतीकात्मक अर्थ में किया जाता है। नये नियम में यह केवल यहां और इफिसियों 3:17 में मिलता है। पूर्ण कर्मवाच्य कृदंत होने के कारण ''जड़ पकड़ते'' कालांतर में पूरा हो चुके परन्तु निरन्तर परिणाम देने वाले कार्य को दिखाता है। यीशु को ग्रहण करके और उस में प्रवेश करके पौलुस के पाठकों ने उस में जड़ पकड़ ली थी। यीशु के साथ इस सम्बन्ध को बनाए रखकर उन्होंने सदा के लिए उसमें जड़ पकड़े रखनी थी।

अधिकतर पौधों को दो बातों की आवश्यकता होती है ताकि वे बढ़कर मज़बूती से खड़े रह सकें। पहला उनके लिए अच्छी भूमि में जड़ लगाना आवश्यक है। दूसरा उनके लिए भूमि में मज़बूती से बढ़ना आवश्यक है। जड़ों से स्थिरता और विकास मिलता है। मसीही लोगों के लिए मसीह में पक्की जड़ रखना आवश्यक है ताकि वे उससे मिलने वाले जीवन से दृढ़ होकर बढ़ सकें। यदि हम यीशु में मज़बूती से रोपे गए हैं तो हमारी जड़ आसानी से नहीं निकलेगी। कुलुस्से के लोग चाहे रास्ते से भटके नहीं होंगे फिर भी पौलुस ने उन्हें उस जीवन में जिसे उन्होंने आरम्भ किया था बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करना चाहा।

''और उसी में ... दृढ़ होते जाओ'' (2:7)

दृढ़ होते जाओ (*epoikodomoumenoi*) ढांचा बनाने, गुणों को विकसित करने या किसी काम को मानने वाले लोगों को बढ़ाने में सहायता करने की बात है। पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल किसी के किसी दूसरे के काम पर बनाने और सहयोगपूर्ण प्रयास के सम्बन्ध में किया (1 कुरिन्थियों 3:10-14)। प्रतीकात्मक रूप में इफिसियों 2:20 में यह दूसरों को यीशु की कलीसिया का भाग बनने की बात करता है। पौलुस ने आधुनिक ढांचे को बनाने के लिए ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल किया (1 पतरस 2:5), और यहूदा ने इसे विश्वास में बढ़ने में लागू किया (यहूदा 20)।

वर्तमान कृदंत के रूप में ''बढ़ते जाओ'' के निरन्तर कार्य को दिखाता है। कुलुस्सियों के

लिए मज़बूती से जड़ पकड़कर, मज़बूती से जड़ पकड़े *रहना* था। इस आधार से वे यीशु में ''बढ़ते'' रह सकते थे।

मसीही लोग परमेश्वर की इमारत हैं। जिसे प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बनाया गया है जिसके कोने का सिरा यीशु है (1 कुरिन्थियों 3:9, 11; इफिसियों 2:20, 21)। सिर और सदस्यों अर्थात कलीसिया की ओर से जो भी दिया जाता है वह बढ़ता जाता है (इफिसियों 4:12, 16; 1 थिस्सलुनीकियों 5:11; 1 पतरस 2:5)। सिद्ध होने के लिए, मसीही लोगों के लिए उसमें बने रहना और उसमें मिलने वाले ज्ञान के द्वारा नये होते रहना आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:10)। मसीह के प्रति निष्ठा और उसके साथ निकट सम्बन्ध आत्मिक परिपक्वता या सिद्धता के लिए आवश्यक है। **उसी में** आत्मिक जीवन के स्रोत और बनावट का सुझाव देता है जो भाइयों को विश्वास में मज़बूत बनाता है। यदि हम उसमें बढ़ते हैं तो हमें उसकी सामर्थ मिलेगी और आत्मिक रूप में हम आसानी से गिरेंगे या नष्ट नहीं होंगे।

आत्मिक विकास यीशु से मिलता है इसलिए कुलुस्सियों को बढ़ते रहने के लिए किसी और साधन को देखने की आवश्यकता नहीं। उन्हें उसी से अपने बढ़ने की चाह रखनी होगी। जिसमें वे बोए गए थे। मसीह में जड़ पकड़ने का अर्थ है कि उनका विकास उसी से होने वाला था। वे अपनी नींव के रूप में यीशु पर बने थे, इस कारण उनमें स्थिर रहना था और इस प्रकार उस नींव को बार-बार नींव आवश्यकता नहीं होनी थी (इब्रानियों 6:1)।

क्या आत्मिक सिद्धता को बढ़ाने का कोई और ढंग है? कलीसिया के संस्कार और भावना से ओत-प्रोत व्यवहार जिन्हें पवित्र आत्मा से जोड़ा जाता है मसीह में बढ़ने का ढंग नहीं। आत्मिक रूप में बढ़ने के लिए इन गुणों को पाने की चाह रखने वाले ये समझ नहीं पाते हैं कि हर आत्मिक विकास का स्रोत यीशु है।

''और जैसा तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ'' (2:7)

दृढ़ होते जाओ (*bebaioumenoi*) का अर्थ मुख्यतया ''बिना शक के साबित किया गया'' है। ऐसे प्रमाण का उदाहरण वचन के प्रचार किए जाने पर इसकी पुष्टि होना है (मरकुस 16:20)। यह अभिव्यक्ति मसीह के सम्बन्ध में सच साबित हो चुकी प्रतिज्ञाओं (रोमियों 15:8) और पुष्टि हो चुकी गवाही के लिए भी इस्तेमाल हुई है (1 कुरिन्थियों 1:6)। पवित्र आत्मा ने पौलुस की वास्तविक प्रेरिताई के चिह्न के रूप में कुरिन्थियों को आश्चर्यकर्मों के दान दिए (1 कुरिन्थियों 9:1, 2; 12:4-11; 2 कुरिन्थियों 12:12)। ''दृढ़ होते'' का इस्तेमाल लोगों के दृढ़ संकल्प अर्थात विश्वास में ही इस्तेमाल हुआ है (1 कुरिन्थियों 1:8; 2 कुरिन्थियों 1:21; इब्रानियों 13:9)।

कुलुस्से के लोग **विश्वास में** वैसे ही **दृढ़** थे **जैसा सिखाए गए** थे। ''विश्वास में'' के लिए यूनानी धर्मशास्त्र में *tē pistei* है जैसा कि 1:23 में है। ''विश्वास'' से पौलुस का अभिप्राय पूरी मसीही शिक्षा अर्थात प्रकट की गई सच्चाई है जिसे मसीही लोगों द्वारा माना जाना आवश्यक है।

''सिखाए गए'' (*didaskō*) सिखाने या किसी को कुछ करने के लिए बताने के लिए इस्तेमाल होने वाला सामान्य शब्द है (मत्ती 4:23; 28:15)। पौलुस की इच्छा थी कि कुलुस्से के लोग उस शिक्षा में बने रहें जो उन्होंने परमेश्वर के वचन से लिखी थीं (रोमियों 10:17)।

उन्हें विश्वास में दृढ़ होना, अपने जीवनों को उन सच्चाइयों को बनाना जो उन्होंने सुनी थी और सीखते रहना आवश्यक था। यदि वे अपने विश्वास में दृढ़ हो जाते तो उन्होंने आसानी से इस शिक्षा की ओर नहीं मुड़ना था या विश्वास से जल्दी से भटकना नहीं था। इपफ्रास ने उन्हें सही ढंग से सिखाया था। इस शिक्षा से दूर जाने के बजाय उन्हें उन निर्देशों में जो उसने उन्हें आत्मिक रूप में दृढ़ बनने के लिए दिए थे दृढ़ता से बने रहना था। पौलुस को इस बात में संदेह नहीं था कि उन्हें सही ढंग से सिखाया गया था या उसे उनके जीने के ढंग पर कोई संदेह नहीं था। उसने उन्हें उसी में बने रहने के लिए जिसे उन्होंने आरम्भ किया और अपने जीवनों को यीशु द्वारा दिए नमूने के अनुसार बढ़ाते रहने को प्रोत्साहित किया।

मनुष्य को जीवित रहने के लिए परमेश्वर के वचन की आवश्यकता है (देखें मत्ती 4:4)। पौलुस ने लिखा कि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया और इसमें वे सच्चाइयां हैं जो एक मसीही व्यक्ति को ''सिद्ध, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। इसलिए पौलुस ने तीमुथियुस को वचन की शिक्षा देने और प्रचार करने को समझाया (1 तीमुथियुस 4:11; 6:2; 2 तीमुथियुस 2:2; 4:2)। पतरस ने समझाया कि इसके द्वारा विकास होता है (1 पतरस 2:2)। वचन को सिखाना मसीही कृपा और सिद्धता का आधार और आत्मिक शक्ति का स्रोत है (इब्रानियों 4:12)।

पौलुस अपने पाठकों को नई शिक्षा नहीं दे रहा था। उन्होंने उन सच्चाइयों को ग्रहण किया था जिनकी उन्हें आवश्यकता थी। नई सच्चाइयों को खोलने के बजाय उन्हें उसी शिक्षा पर बनाना आवश्यक था जो उन्होंने पाई थी। कोई भी नई शिक्षा जो उससे मेल नहीं खाती जो उन्हें मिली थी, झूठी शिक्षा होनी थी (देखें गलातियों 1:7, 8)। हमें जो यीशु द्वारा प्रकट किया गया है उसके बाहर नई शिक्षा की तलाश नहीं करनी चाहिए बल्कि उसी सच्चाई में जो उसने दी है सिद्धता से बढ़ना आवश्यक है (इब्रानियों 6:1)।

''और अधिका अधिक धन्यवाद करते रहो'' (2:7)

उनके विश्वास का लक्ष्य और हमारी आशा की उम्मीद अनन्त जीवन है, इस कारण उनके मन **अधिकाधिक** (*perisseuō*) अर्थात उमड़ रहे होने चाहिए। निरन्तर क्रिया को व्यक्ति करते थे पौलुस ने फिर वर्तमान कृदंत का इस्तेमाल किया। उसके कहने का अर्थ था कि उन्हें **धन्यवाद** के साथ ''बढ़ते या भरते'' रहना चाहिए। उनका धन्यवाद चाहे पहले ही अधिका अधिक यानी उमड़ रहा था, फिर भी पौलुस ने उन्हें कुलुस्सियों को परमेश्वर के लिए अपने धन्यवाद में बने रहने को प्रोत्साहित किया।

स्वर्ग की ओर देखने के अलावा कुलुस्से के लोग उन आशिषों के लिए जो उन्हें भक्तिपूर्ण जीवन से मिल रही थी, उस स्वतन्त्रता के लिए जो पाप के दोष से मिली थी और उस संगति के लिए जो यीशु और उनके साथी मसीही लोगों से मिली थी, धन्यवादी हो सकते थे। यह समझ कि यह लाभ परमेश्वर की ओर से ही मिले थे न कि उनकी अपनी प्राप्तियों से, उसकी तारीफ करने के लिए धन्यवादी होने चाहिए थे, जो सब आशिषों को देने वाला है (याकूब 1:17)। मसीह के द्वारा उनके लाभ से उनके मन विनम्र धन्यवाद के साथ भर जाने चाहिए थे।

धन्यवाद से संतुष्टि मिलती है, जिससे स्थिर रहने वाला प्रभाव मिलता है। वे लोग जो कुछ

उनके पास है उससे प्रसन्न होते हैं और उसका आनन्द लेते हैं उन्हें लगभग यकीन होता है कि उनके पास यह रहेगा। यीशु मन को वैसे संतुष्ट करता और भरता है जैसे कोई और नहीं भर सकता (यूहन्ना 4:14)। कुलुस्सियों को अपनी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति और धन्यवाद से उनके मनों को भरने के लिए किसी और की आवश्यकता नहीं थी।

इस भाग में चुनौती स्पष्ट है कि पौलुस कुलुस्से के मसीही लोगों के लिए पक्का विकास चाहता था। आर. सी. लूकस ने इसे इस प्रकार संक्षिप्त किया है:

> तो इस भाग का तिरहा आदेश दिखाता है कि पौलुस आत्म संतुष्टि का सज्जन नहीं है। वह अपने पाठकों को जीवन के पूरी तरह से मेल खाते सुसंगत ढंग, आत्मिक कद की पूर्णता और ज्ञान की पूरी समझ के लिए कहता है। पर यह वास्तविक विकास हो जोकि मसीह के उद्धार दिलाने वाले सुसमाचार के समान रूप में बढ़ना है।[10]

प्रासंगिकता

मसीह बुद्धि और ज्ञान का स्रोत

पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि हम अपने जीवनों को मसीह पर बनाएं उसके महत्व और अधिकार की बात मज़बूती से रखी। हमें पौलुस के नमूने को मानना और लोगों को यीशु के सचमुच के अनुयायी बनना सिखाने के लिए चिन्तित होना आवश्यक है।

पौलुस की तरह हमें लोगों को अपने जीवनों में यीशु के महत्व को समझाने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमारे प्रयास वैसे ही हों जैसे पौलुस के थे। उसने संघर्ष किया ताकि मसीही लोगों को निम्न बातें मिल सें:

(1) प्रोत्साहित मन। समर्पित मसीही वे हैं जिनके मन अपने सक्रीय विश्वास की उन्नति और परिणाम को देखकर प्रफुलित होते हैं। यूहन्ना यह जानकर आनन्द से भर गया था कि वे मसीही लोग जो कि उसके परिश्रम का परिणाम थे सत्य पर चल रहे थे (3 यूहन्ना 4)।

जब परिस्थितियां कठिन हों और लगे कि कुछ नहीं होने वाला, तब हिम्मत हारना आसान होता है। जोश से भरे रहने के लिए हमें यह जानते हुए कि अन्त में हमारे हर प्रयास को आशीष मिलेगी, अपने लक्ष्य पर नज़रे टिकाये रखना आवश्यक है। पौलुस ने यह लिखा कि यह जानते हुए कि ''प्रभु में हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं है'' हमें यीशु की सेवा करते रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।

संकट आने पर, निराश होने के बजाय हमें उन लाभों के कारण जो हमें उनसे मिल सकते हैं जैसे धीरज, चरित्र और धार्मिकता में बढ़ौतरी, हमें प्रोत्साहित होना चाहिए (रोमियों 5:3, 4; याकूब 1:2; इब्रानियों 12:11)। परीक्षाओं का अर्थ यह हो सकता है कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है और अपने इस्तेमाल के लिए हमें अच्छे औज़ार बनाने और हमारे जीवनों को ढालने के लिए काम कर रहा है, ''क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है'' (इब्रानियों 12:6)।

पौलुस के सारे संघर्ष, कठिनाइयों, सतावों में उसने हिम्मत नहीं छोड़ी (2 कुरिन्थियों 4:1)।

हमें अपने कष्ट के बीच पौलुस के आश्वासन से बहुत प्रोत्साहन मिल सकता है: ''क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रकट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं'' (रोमियों 8:18)। जिस महिमा की हमें प्रतिज्ञा दी गई है वह यह है कि हम पुनरुत्थान के समय (फिलिप्पियों 3:21; 1 यूहन्ना 3:2) परमेश्वर की समानता में बदल जाएंगे (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)। उस समय हमें पता चलेगा कि इस जीवन में यीशु की सेवा करने के हमारे सब प्रयास काम आए हैं। पौलुस ने लिखा है, ''हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' (गलातियों 6:9)।

(2) प्रेम के कारण निकटता। मसीही लोगों के रूप में हमें आत्मिक रूप में निकट होना आवश्यक है। प्रेम का एक सामान्य बन्ध हमें एकजुट करता है। मसीही लोगों की निकटता का वर्णन करने के लिए पौलुस ने ''गठे'' शब्द का इस्तेमाल किया। वैसे ही जैसे कपड़े का एक टुकड़ा बंधा रहता है क्योंकि तारों की धागे की डोरियां उसे बांधे रखती हैं, मसीही लोगों को प्रेम से बंधे रहना आवश्यक है। हमें अकेले नहीं होना है, जैसे एक डोरी अपने आप में उलझ जाती है, बल्कि मसीही संगति के सुन्दर वस्त्र में बुने जाना है। प्रेम वह गुण है जो लोगों को पूरे मसीही परिवार का भाग बनने में सहायता देगा।

मसीही व्यवहार का शिखर प्रेम हैं। प्रेम की आज्ञा दी गई है (यूहन्ना 13:34)। इसे सबसे बड़े गुण के रूप में सराहना की गई है (1 कुरिन्थियों 13:13)। परमेश्वर प्रेम है। उसके जैसे बनने के लिए हमें प्रेम करना आवश्यक है। यदि हम प्रेम नहीं करते हैं, तो हम परमेश्वर को नहीं जानते, क्योंकि वह प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8)।

(3) समझ के पूरे आश्वासन का धन। पौलुस के कहने का अर्थ यह नहीं था कि सांसारिक धन समझ से मिलता है। ऐसे धन की इच्छा संसार सबसे अधिक करता है। लोगों ने पैसे के लिए अपनी आत्माओं को बेच दिया है और कई परिक्षाओं और झमेलों में पड़ गए हैं जिसमें ''और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं'' (1 तीमुथियुस 6:9)। कई लोग पैसे के प्रेम के कारण नष्ट हो गए हैं।

मसीही लोगों के रूप में जो धन हमारे पास होना चाहिए वह उस समझ से मिलता है जो यीशु देता है। मूसा ने सच्चे धन को समझ लिया था। उसने ''मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उसकी आंखें फल पाने की ओर लगी थीं'' (इब्रानियों 11:26)। सुलैमान ने लिखा है, ''नम्रता और यहोवा के भय मानने का फल धन, महिमा और जीवन होता है'' (नीतिवचन 22:4)।

सुलैमान को धन की समस्या की गहरी समझ थी। उसने लिखा, ''जो रुपए से प्रीति रखता है वह रुपये से तृप्त न होगा; और न जो बहुत धन से प्रीति रखता है'' (सभोपदेशक 5:10)। बुद्धि और समझ का फल ''चोखे सोने से, वरन कुन्दन से भी उत्तम है, और मेरी उपज उत्तम चान्दी से अच्छी है'' (नीतिवचन 8:19)। उसने धन की चाह रखने वालों को ताड़ना दी:

धनी होने के लिए परिश्रम न करना;
अपनी समझ का भरोसा छोड़ना।
क्या तू अपनी दृष्टि उस वस्तु पर लगाएगा, जो है ही नहीं?

वह उकाब पक्षी की नाईं पंख लगाकर,
नि:सन्देह आकाश की ओर उड़ जाता है (नीतिवचन 23:4, 5)।

सही इच्छा न तो निर्बलता और न धन। दोनों ही व्यक्ति को प्रभु से मोड़ सकते हैं (नीतिवचन 30:8, 9)। बल्कि हमें आत्मिक धन और सम्पत्ति की इच्छा करनी चाहिए जो मसीह के द्वारा मिलती है।

(4) *मसीह में बुद्धि और ज्ञान।* परमेश्वर की बुद्धि और ज्ञान केवल यीशु के द्वारा प्रकट किए जाते हैं। पौलुस ने लिखा कि परमेश्वर को सांसारिक बुद्धि से नहीं जाना जा सकता है (1 कुरिन्थियों 1:21)। यीशु को और उसकी शिक्षाओं को समझना ही सच्चा ज्ञान है। पौलुस प्रेरित की तरह हमारी चिंता भी लोगों को उस ''बुद्धि और ज्ञान के भण्डार'' तक लाना है जो मसीह में मिलता है।

(5) *मसीह के साथ वफ़ादारी।* मसीह में भण्डारों के कारण हमें उसके प्रति वफ़ादार रहना चाहिए और मनुष्यों की इच्छा और फ़िलॉसफ़ी में नहीं पड़ना चाहिए। कुलुस्सियों को यह बताने का कि सारी बुद्धि और ज्ञान मसीह में मिलता है, पौलुस का कारण उन्हें यीशु की ओर देखने के लिए प्रोत्साहित करना था न कि मानवीय बुद्धि को देखने के लिए।

आत्मिक क्षेत्र में हमें जिस भी चीज़ की आवश्यकता है वह मसीह में मिलती है। सारी बुद्धि और समझ मसीह में मिलती है। हमें उसी में बनना और उसी को थामे रहना और उससे दूर न होना आवश्यक है। यदि हम सचमुच में उसका भाग बन जाएं तो कोई भी सांसारिक शक्ति या शिक्षा हमें उसके साथ हमारे सम्बन्ध को तोड़ेगी नहीं।

विश्वास में बढ़ना (2:1-5)

बड़े बड़े भण्डार यीशु में पाए जाते हैं। हमारा लक्ष्य उस में मज़बूत होना और उन लाभों का आनन्द लेना होना आवश्यक है जो उसके साथ निकट सम्बन्ध से मिल सकते हैं। संसार के नियमों का यीशु में पाए जाने वाली आशिषों के धन से कोई मुकाबला नहीं है।

पौलुस ने दूसरों की भलाई चाही (आयतें 1, 5)। उसने भाइयों को व्यक्तिगत आत्मिकता और डॉक्ट्रिनल शुद्धता में लाकर उन्हें मसीह में सिद्ध प्रस्तुत करने की कोशिश की।

कलीसिया के हर अगुवे को मसीह के अनुयायियों की आत्मिक सिद्धता की इच्छा करनी चाहिए। इफिसियों में पौलुस ने अगुओं को मण्डली के लोगों को ''हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में, और एक सिद्ध मनुष्य और मसीह के पूरे डील डौल तक'' बढ़ाने का निर्देश दिया (इफिसियों 4:13)।

लड़के आम तौर पर लम्बे होना चाहते हैं। कई बार वे यह देखने के लिए कि वह कितने लम्बे हो गए हैं अपने आपको अपने माता पिता के साथ मिलाते हैं। एक लड़का अपने ऊंचे कद को दिखाने के लिए अपने छोटे भाई बहनों के पास गर्व से खड़ा हो सकता है। कोई और यह देखने के लिए कि उसे उस व्यक्ति के जितना लम्बा होने के लिए और कितना ऊंचा होना पड़ेगा अपने से लम्बे मित्र के पास खड़ा हो सकता है।

अगुवे मसीही लोगों को अपने श्रेष्ठ गुणों पर शेखी मारने के लिए दूसरों के साथ न मिलाने

के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। वे भाइयों को यीशु के साथ न मिलाने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं ताकि वे उसके ढील ढौल में बढ़ सकें।

पौलुस का व्यवहार ऐसा था कि वह मसीही लोगों को बढ़ने में सहायता करके अपना बलिदान करने में प्रसन्न रहता था (फिलिप्पियों 2:17)। मसीही अगुओं को मण्डली की भलाई के लिए अपने आपको देने को तैयार रहना आवश्यक है।

पौलुस प्रेम और आत्मिक समझ के नज़दीकी बंधन का इच्छुक था (आयत 2)। उसका बड़ा लक्ष्य मसीही समाज को उस प्रेम तक पहुंचाना था जो उन्हें एक दूसरे के साथ और नज़दीकी के साथ पा सके। प्रेम सिखाने के साथ-साथ ''पकड़ा'' जाता है। प्रेरितों ने यीशु के साथ अपनी संगति से प्रेम को सीखा था (यूहन्ना 13:34)। पौलुस ने निष्कपटता से अपने साथी मसीही लोगों से प्रेम किया (1 कुरिन्थियों 10:14; 15:58; 16:24; 2 कुरिन्थियों 2:4)। चेलों के पास पौलुस का अनुसरण करके जैसे उसने मसीह का अनुसरण किया था उससे प्रेम सीखने का अवसर था (1 कुरिन्थियों 11:1)। दाऊद के लिए अपने प्रेम के कारण जो बलिदान योनातान देने को तैयार था वह प्रेम का अच्छा उदाहरण है जो मसीही लोगों को एक-दूसरे के साथ करना चाहिए।

यीशु से सीखने में बहुत समय बिताया जाना चाहिए। वह बुद्धि और ज्ञान का सच्चा स्रोत है (आयतें 3, 4)।

केवल यीशु की ओर देखना (2:6, 7)

मसीही लोगों को केवल यीशु में चलना आवश्यक है (आयत 6) क्योंकि पिता तक पहुंचाने वाला इकलौता मार्ग वही है (यूहन्ना 14:6; प्रेरितों 4:12)। जीने के उस नमूने का पालन करना है जो उसने हमें दिया है (1 यूहन्ना 2:6)। मसीही लोगों के लिए हमारा लक्ष्य अपने लोगों को यीशु की जीवन-शैली तक सीमित करना है। जो लोग इसके उलट करते हैं वे यीशु में नहीं चल रहे हैं।

हमें यीशु में मज़बूती से जड़ पकड़नी चाहिए (आयत 7)। पेड़ की जड़ें कहीं गहरी, मज़बूत हों तो वह तूफ़ानों में खड़ा रह सकता है। दाऊद ने समझाया कि परमेश्वर के वचन पर मनन करने वाला व्यक्ति उस वृक्ष की तरह है जो नदी के किनारे लगाया गया है (भजन संहिता 1:3)। हमें यीशु के साथ इस प्रकार से लिपट जाना चाहिए कि नैतिकताओं में, शिक्षा में या अपने जीवन के किसी भी पहलू में उससे अलग न हो सकें (1 कुरिन्थियों 15:58)। संसार के द्वारा शैतान मसीही लोगों को यीशु के साथ पक्के सम्बन्ध से छुड़ाने की तलाश में रहता है (1 पतरस 5:8)। यूहन्ना मसीह के चेलों से संसार के प्रेम या संसार की बातों में न पड़ने की शिक्षा देता है (1 यूहन्ना 2:15-17)।

टिप्पणियां

[1]यही यूनानी शब्द फिलिप्पियों 1:30; 1 थिस्सलुनीकियों 2:2; 1 तीमुथियुस 6:12; 2 तीमुथियुस 4:7; इब्रानियों 12:1 में मिलता है। [2]उदाहरण के लिए, देखें प्रेरितों 20:31; 2 कुरिन्थियों 2:4; गलातियों 4:19; फिलिप्पियों 1:18; 1 थिस्सलुनीकियों 2:8. [3]कुछ हस्तलिपियों में ''और हियरापोलिस वालों'' जोड़ा गया है।

[4]1 शमूएल 16:7; 1 राजाओं 8:39; लूका 16:15; प्रेरितों 1:24; रोमियों 8:27; प्रकाशितवाक्य 2:23. [5]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एंड यूजीन ए. निडा, *ए ट्रांसलेटर' स हैंडबुक ऑन पॉल'स लैटर्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* हेल्प्स फ़ॉर ट्रांस्लेटर्स (न्यू यार्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1977), 46. [6]एच. सी. जी. माउल, द *एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजस (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट, 1902), 97. [7]ब्रेचर एंड निडा, 48. [8]देखें 1 कुरिन्थियों 11:23; 15:1, 3; गलातियों 1:9, 12; फिलिप्पियों 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13; 4:1; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6. [9]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एंड द इंटेलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू ए कोलोसियंस,* संशो. व संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1959), 76. [10]आर. सीट लूकस, द *मैसेज ऑफ कोलोसियंस एंड फिलेमोन: फ़ुलनेस एंड फ्रीडम,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइ: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1980), 93.